उदारवाद LIBERALISM.

अध्ययन सामग्री निर्माण

डा शकील हुसैन

shakeelvns27@gmail.com

विभागाध्यक्ष

राजनीति विज्ञान

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महिविद्यालय ।

दुर्ग , छत्तीसगढ़ ।

नैक द्वारा A+ मूल्यांकित

उदारवाद LIBERALISM.

उदारवाद मूलतः पुनर्जागरण प्रसूत बौद्धिक चेतना और वैज्ञानिईता तथा व्यक्तिवादी चिन्तन का परिणाम है । धर्म सुधार आन्दोलनों और पुनजोगरण का इस पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ा।

परिभाषा

सारटोरी - " मोटे तौर पर उदारबाद व्यक्तिगत स्वतंत्रता न्यायिक सुरक्षा तथा संवैधानिक राज्य का सिद्धांत एवं व्यवहार है।"

हाबहाउस - "उदारवाद में विभिन्न प्रकार की स्वतंत्रताओं के सम्बन्ध में सामन्तवाद की आलोचना की । उदारवाद का सम्बन्ध इस धारणा से है कि समाज का निर्माण व्यक्ति की स्वयं की शक्तियों के आधार पर कुशलता पूर्वक किया जा सकता है और केवल इसी आधार पर सच्चे समाज का निर्माण हो सकता है । "

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

वास्तव उदारवाद का जन्म राज्य के विरुद्ध व्यक्तिगत स्वतंत्रता के रूप में हुआ और इसी रूप में इसका विक्कास हुआ | इसने व्यक्तिगत स्वतंत्रता की मांग दो रूपों में की - 1- आर्थिक क्षेत्र में

2- राजनीति क्षेत्र में |

उन दोनों ही क्षेत्र में निर्बाध व्यक्तिगत स्वतंत्रताओं ने कई प्रकार की समस्याएं पैदा कर दी जिसके कारण इस पर प्रतिबन्ध लगाने और प्रतिबन्ध न लगाने की बात प्रारम्भ हुई। जिसके कारण हम उदारबाद को विकासात्मक दृष्टि से दो भागों में रखते हैं -

1-नकारात्मक उदारबाद

2- सकारात्मक उदारवाद.

1. **नकारात्मक उदारवाद** -

नकारात्मक उदारधार आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में व्यक्ति की स्वतंत्रता और गतिविधियों को बिना रोक टोक जारी रखी चाहता है।

हाब्स लाक , मिल. बेंथम, स्पेसर आदि के विचारको को हम इस श्रेणी में रख सकते हैं

इसकी मूल मान्यताएँ है

1--व्यक्ति की स्वतंत्रता पर कोई हस्तक्षेप नहीं होता चाहिए।

2- व्यक्ति के विचार, भाषण और लेखन पर कोई रोक-टोक नही होनी चाहिए ।

3- आर्थिक क्षेत्र मे व्यक्ति की आर्थिक गतिविधियों पर कोई रोक टोक नही होनी चाहिए ।

4- वस्तुओं के दाम , ब्याज की दर, उत्पादन की मात्रा आदि पर रोक टोक नही होनी चाहिए , यह सब मांग एवं आपूर्ति पर बाजार की ताकतो द्वारा तय किया जाना चाहिए ।

5- जो राज्य कम से कम काम करे वही सर्वोतम राज्य है ।

6- केवल विधि के शासन द्वारा राज्य के कार्यों को सीमित करना।

सकारात्मक उदारवाद--

यह आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में व्यक्ति की स्वतंत्रता और गतिविधियों पर अधिक राज्य के प्रतिबंधों को आवश्यक मानता है।

18वी सदी की शुरुआत तक पूंजीवाद काफ़ी विकसित हो था। साथ ही इसके दुष्परिणाम भी आने लगे थे । अमीर और अधिक अमीर और गरीब अधिक गरीब हो रहे थे । निचले तबके की आर्थिक स्थिति भयावह हो रही थी। मार्क्सवाद ने पूंजीवाद पर प्रबल प्रहार किए। परिणामत: व्यक्ति को अबाध स्वतंत्रता पर रोक लगाने की स्वाभाविक मांग उठने लगी। इसे ही हम सकारात्मक उदारवाद के नाम से जानते हैं। **टी एच ग्रीन को इसका**

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

जनक कह सकते हैं। इसके अलावा, **लास्की, हाबहाउस, रस्को पाउण्ड, मैकिइवर, बार्कर, कींस** आदिको उसका समर्थक माना जाता है ।

मूलमान्यताएं -

1- व्यक्ति की स्वतंत्रता पर उचित प्रकार के प्रतिबन्ध होने चाहिए।

2- व्यक्ति की स्वतंत्रता विशेषकर आर्थिक स्वतंत्रता पर सम्पूर्ण समाज के संदर्भ में आवश्यक प्रतिबंध होने चाहिए

3- व्यक्ति के नैतिक विकास की जिम्मेदारी राज्य पर है।

4- अत: राज्य का कार्य है व्यक्ति को नैतिक विकास के मार्ग मे आने वाली बाधाओं को दूर करना।

5- अत: यदि वैयक्तिक स्वतंत्रता उसके, विकास में बाधक है तो राज्य को यह अधिकार है कि वह उसपर प्रतिबंध लगाए । Hindering Hindrances of good life. इसका प्रधान आधार है।

6- व्यक्ति स्वतंत्रता और अधिकार पूरक हैं। अर्थात् एक के अधिकार दूसरे पर प्रतिबन्ध है।

7- यह राज्य के कार्यों के विस्तार के पक्ष है अर्थात् राज्य
को अधिक से अधिक कार्य करने चाहिए ।

8 यह सम्पत्ति, उत्पादन के साधनों के युक्तियुक्त वितरण
में राज्य की भूमिका की आवश्यक मानता है ।

उदारवाद ने ही " लोक कल्याण की राज्य" की अवधारणा का मार्ग प्रशस्त किया।

गृहकार्य

1- उदारवाद की मूलमान्यताएं बताइए ।

2- नकारात्मक उदारवाद और सकारात्मक उदारवाद मे अंतर बताइए ।

संदर्भ

आनलाइन रिसोर्स

DR. SHAKEEL HUSAIN

https://www.manchesteropenhive.com/view/9781526137951/9781526137951.00014.xml

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

https://journals.sagepub.com/doi/abs/10.1177/009059171453510 3?journalCode=ptxa

DR. SHAKEEL HUSAIN

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE